5 — जाँच (Evaluation)

4 6 - पाठ्य-सहगामी क्रियायें (Verification) आदि। (Co-Curricular Activities)

5

6

"सृजनात्मकता और विद्यालय"

Creativity and School

7 विद्यालयों में सृजनात्मकता के विकास की सर्वाधिक सम्भावनायें तथा अवसर विद्यमान रहते हैं। विद्यालय की स्वच्छता तथा उसका सौन्दर्यीकरण आवश्यक है। छात्रों में समूह बनाकर उनकी प्रतियोगिताएँ कराई जा सकती हैं। विजेता समूह तथा छात्रों को विद्यालय की सभा के समक्ष प्रशंसा देनी चाहिए तथा पराजित समूह को सांत्वना देनी चाहिए।

1 - विद्यालय का वातावरण —

Scanned with CamScanner

2019

JANUARY

WK 04 | DAY 024-341

24

THURSDAY

२- अनुशासन
३- अध्यापक - छात्र सम्बन्ध
४- अध्यापक प्रधानाध्यापक सम्बन्ध -
५- विद्यालय अभिभावक सम्बन्ध।

1 - विद्यालय का वातावरण

इसके अन्तर्गत अध्यापक तथा छात्र दोनों को ही कार्य करना पड़ता है। विद्यालय की स्वच्छता तथा उसका सौन्दर्यीकरण आवश्यक है। छात्रों में समूह बनाकर उनकी प्रतियोगिताएं कराई जा सकती हैं। विजेता समूह तथा छात्रों को विद्यालय की सभा के समक्ष प्रशंसा देनी चाहिए तथा पराजित समूह को सांत्वना देनी चाहिए।

② अनुशासन

विद्यालय की प्रतिष्ठा छात्रों तथा अध्यापक मण्डल के अनुशासन पर निर्भर करती है। छात्रों को ऐसे अवसर दिये जाने चाहिये कि उनमें अनुशासन में रहने तथा अनुशासन में रहने देने की भावना विकसित हो। सेमिनार, कान्फ्रेन्स, अध्यापक-अभिभावक संघ, काम लेना, डाँट-फटकार आदि माध्यमों से अनुशासन का वातावरण उत्पन्न किया जाता है। छात्र संघ, छात्र दिवस, सदन प्रणाली, आचरण संहिता, समाज सेवा, सामूहिक खेल आदि द्वारा अनुशासन का विकास किया जा सकता है।

③ अध्यापक - छात्र सम्बन्ध

सृजनात्मकता का विकास तभी सम्भव है जबकि अध्यापक व छात्रों के मध्य स्नेह तथा मधुर सम्बन्ध होंगे। अध्यापक को छात्रों की सम्पूर्ण पृष्ठभूमि तथा उनकी क्षमताओं का पता लगाना चाहिए। इस कार्य के लिये प्रधानाध्यापक के साथ भी सम्पर्क रखना आवश्यक है।

④ अध्यापक - प्रधानाध्यापक सम्बन्ध

केवल अध्यापक बालक में सृजनात्मकता की सम्भावनाएं उत्पन्न करने तथा उनका विकास करने में तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि वह प्रधानाध्यापक का सहयोग न लेता। प्रधानाध्यापक को अध्यापक की सलाह से सृजनशील बालकों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। अन्य विद्यालयों में जाकर वहाँ कार्यप्रणाली देखनी चाहिए। अध्यापकों को सृजनशील साहित्य का अध्ययन करना चाहिए।

⑤ विद्यालय - अभिभावक सम्बन्ध

विद्यालय बालक को शिक्षित करने का एक अभिकरण है। माता-पिता के तथा परिवार के सदस्य दूसरे अभिकरण के रूप में कार्य करते हैं। इसलिये अध्यापक अभिभावक संघों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	FEBRUARY
·	·	·	·	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	— 2019 —

FEB MAR APR MAY JUN

66

सृजनात्मकता के विकास में अध्यापक की भूमिका

Discuss the role of the teacher in Nurturing of Creativity

शिक्षक कक्षा में उचित वातावरण बना के छात्रों की सृजनात्मकता का विकास कर सकता है। शिक्षक को सृजनात्मक शिक्षक करना चाहिए। सृजनात्मक शिक्षण, लचीला, कल्पना प्रधान, समन्वयात्मक, स्वानिर्देशन आदि पर आधारित होना चाहिए। अभिप्रेरणा, उद्दीपन, पुष्ठपोषण तथा अन्वेषण शिक्षण विधि के आधार स्तम्भ है। इस प्रकार के चिन्तन में अपसारी चिन्तन की योग्यता को बढ़ावा मिलता है। स्वाजन की प्रवृत्ति का प्रोत्साहन मिलता है। शिक्षक उपयुक्त वातावरण का सृजन करता है, चुनौतीपूर्ण अनुभव प्रदान करता है तथा अनुभवों को निर्देशित करता है। सीखने का उत्तरदायित्व बालक का होता है। शिक्षण की प्रक्रिया तब सृजनात्मक होती है जब व्यक्ति अपनी शिक्षण प्रविधियों व योजनाओं में सुधार की आवश्यकता अनुभव करता है तथा एक समस्या का समाधान करते समय अनेक विकल्पों पर विचार करता है।

टॉरेन्स के अनुसार - "बाल्यावस्था सृजन की सर्वश्रेष्ठ अवस्था है।"
ईसा-न्यूटन, पास्कल, सैमुअल कोल्ट (Sammuel Colt) है।

अध्यापकों को आधुनिक समूह प्रविधियों जैसे - Seminar, Symposium, discussion panels, workshop आदि से अवगत कराना चाहिए।

सृजनात्मक चिन्तन कई प्रकार का हो सकता है। जैसे - संगीत, कला, पेन्टिंग, साहित्य, विज्ञान सम्बन्धी तथा इनका मापन भी सम्भव है। एक पुरानी धारणा है कि बुद्धि में सृजनात्मकता चिन्तन शामिल है लेकिन, आधुनिक धारणा के अनुसार बुद्धि परीक्षण से चिन्तन का मापन नहीं कर सकते। IQ व Creativity Scores में बहुत कम स्थायी धनात्मक सह-सम्बन्ध होता है। इसका अर्थ है कि सृजनात्मकता के लिए बुद्धि की आवश्यकता जरूरी है लेकिन उच्च सृजनशीलता के लिए उच्च बुद्धि होना आवश्यक नहीं है।

Scanned with CamScanner

2019
JANUARY

WK 04 | DAY 026-339
SATURDAY 26

विद्यालय व परिवार को सृजनात्मकता स्तर को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए।—

1— बच्चों को ऐसे स्थानों पर ले जाना चाहिए जहाँ कुछ सृजनात्मक कार्य किये जाते हैं।
2— बच्चों में ऐसे गुणों को विकसित किया जाना चाहिए जैसे — आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता आदि।

(3) किसी भी कार्य में बालक को स्वतंत्र अवसर प्रदान किये जाने चाहिए (क्रियात्मक कार्य)

(4) बच्चों की मौलिक विचारों एवं क्रियाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
(5) बालकों का वातावरण कुछ नया करने के लिए प्रेरित करने वाला होना चाहिए।
(6) सृजनात्मकता का सम्बन्ध है अहंम (अहं ID) से है। इसलिए शिक्षक व माता पिता को ID (इदं) को संतुष्ट करने के अवसर देने चाहिए।
(7) बच्चों में भय, हिचक को दूर करना चाहिए।
(8) बच्चों को तनाव, चिन्ता, द्वंद्व से दूर रखना चाहिए।
(9) स्कूलों के पाठ्यक्रम में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का भी आयोजन करना चाहिए इन क्रियाओं में छात्रों को स्वतन्त्र दायित्व सौंपे जाने चाहिए।
(10) नयी शिक्षण विधियों का प्रयोग शिक्षक व माता-पिता द्वारा किया जाना चाहिए जैसे खेल तकनीकी, ब्रेन स्टॉर्मिंग आदि।

आदि

सृजनात्मकता की उन्नति के उपायों का वर्णन करें —

Describe the measures for Creativity Inhancement

सृजनात्मक शक्ति को विकसित करने के लिए उचित वातावरण एवं देख रेख की आवश्यकता होती है। यदि उचित प्रोत्साहन, शिक्षा तथा अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर न किए जाएँ तो वह वहीं चली जाती है। सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है। इस पर कुछ एक प्रतिभा संपन्न व्यक्तियों का एकाधिकार नहीं होता है।
इन योग्यताओं को विकसित करने के लिए निम्नलिखित सुझाव सहायक सिद्ध हो सकते हैं जैसे —

1 – उत्तर देने की स्वतंत्रता
2 – मौलिकता तथा लचीलेपन को प्रोत्साहित करना
3 – अज्ञात अभिव्यक्ति के लिए अवसर
4 – झिझक और डर को दूर करना
5 – सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए उचित अवसर एवं वातावरण प्रदान करना
6 – बच्चों में स्वस्थ आदतों का विकास करना
7 – पाठ्यक्रम का उचित आयोजन
8 – सृजनात्मक चिंतन के अवरोधों से बचना
9 – अपना उदाहरण एवं आदर्श प्रस्तुत करना।
10 – समुदाय के सृजनात्मक साधनों का प्रयोग करना।
आदि 11 – मूल्यांकन प्रणाली में सुधार

Scanned with CamScanner

सृजनात्मकता मापन के लिये विभिन्न परीक्षण का वर्णन

Discuss the Various test used for measuring creativity.

यद्यपि सृजनात्मकता वास्तव में एक मानसिक योग्यता ही है, फिर भी अन्य मानसिक योग्यताओं के मापन की तुलना में सृजनात्मकता का मापन एक जटिल कार्य है। सृजनात्मकता के अन्तर्गत अनूठे अस्पष्ट, विस्तृत तथा जटिल कार्यों को करने की अनेक विभिन्न क्षमताएँ समाविष्ट रहती हैं इसलिए सृजनात्मकता का मापन करना मुश्किल कार्य होता है। वास्तव में किसी भी एक परीक्षण की सहायता से किसी व्यक्ति की सम्पूर्ण सृजनात्मकता को कदापि मापा नहीं जा सकता है। यही कारण है कि मैकनील ने सुझाव दिया था कि सृजनात्मकता के प्रत्येक कारक या घटक को अलग-2 परीक्षणों के द्वारा मापा जाना चाहिए। सृजनात्मकता के किसी भी कारक या घटक को मापन के लिए परीक्षण तैयार करने से पूर्व यह आवश्यक है कि उस कारक अथवा घटक को मानव व्यवहार के रूप में स्पष्ट व वस्तुनिष्ठ ढंग से परिभाषित किया जा सके। हरगीब्ज, यसीटन, कान्ट, हैरिस, ओवेन, टॉरेन्स आदि ने सृजनात्मकता के मापन के प्रयासों में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गिलफोर्ड तथा मेरीफील्ड के द्वारा निर्मित 'कॉलेज छात्रों के लिए सृजनात्मकता परीक्षण', हॉलैण्ड तथा कण्ट द्वारा निर्मित "स्कूल छात्रों के लिए सृजनात्मकता परीक्षण" परीक्षण तथा टॉरेन्स के द्वारा तैयार किया गया। "सृजनात्मकता चिन्तन का मिनेसोटा परीक्षण" काफी प्रसिद्ध हुए।

भारत में B. के (R) पासी तथा बाकर मेहन्दी के द्वारा विकसित किए गये सृजनात्मकता परीक्षणों को पर्याप्त सफलता मिली है। यद्यपि सृजनात्मकता के मापन के लिए अनेक परीक्षणों का निर्माण किया जा चुका है परन्तु इन सृजनात्मकता परीक्षणों की अपनी व्यावहारिक उपयोगिता सिद्ध नहीं हो सकी है। अधिकांश परीक्षणों की विश्वसनीयता संदिग्ध है। परीक्षण - पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक का मान प्रायः .40 से .72 के बीच पाया गया है। इन परीक्षणों की पूर्व-कथन वैधता भी काफी कम प्राप्त हुई है। सृजनात्मकता के विभिन्न परीक्षणों पर प्राप्त अंक परस्पर धनिष्ठ रूप से सहसम्बन्धित नहीं होते हैं। यही कारण है कि सृजनात्मकता।

Scanned with CamScanner